तत्त्वार्थ सूत्र के द्वितीय-अध्याय में जीव के भावों का वर्णन प्रारम्भ हुआ है। पाँच प्रकार के भावों का कथन करते हुए कौन से भाव, कितने प्रकार के होते हैं, उनके उपभेदों का भी कथन किया जा रहा है। कल आपको बताया जा चुका है कि उपशम-भाव दो प्रकार का होता है, जो उपशम-सम्यक्त्व और उपशम-चारित्र के नाम से जाना जाता है।

Class 04

पाँच लब्धियों का वर्णन

सम्यक्त्व-चारित्रे।।३।।

इसी सूत्र की व्याख्या में उपशम-सम्यक्त्व के बारे में थोड़ा-सा और समझने की कोशिश करना चाहिए और वह इसलिए भी करना चाहिए क्योंकि जो चीज सबसे पहले मोक्ष मार्ग में घटित हो, उसके बारे में जो जानकारी सैद्धान्तिक तरीके से आचार्यों ने दी है, उसके बारे में थोड़ा-सा हमारे अन्दर भी ज्ञान होना चाहिए। जब उपशम-सम्यक्त्व का भाव उत्पन्न होता है, तो उसके लिए पहले पाँच लब्धियों की आवश्यकता पड़ती है।

1. क्षयोपशम लब्धि- यह पहली लब्धि है। इस क्षयोपशम लब्धि में क्या होता है? जो जीव के परिणाम होते हैं, वह उसके अपने कर्मों के क्षयोपशम से इस तरह के बनते चले जाते हैं कि जो हमारे कर्मों में पूर्वबद्ध अनुभाग है मतलब कर्मों का जो पहले का बना हुआ अनुभाग-बन्ध है, वह अनुभाग-बन्ध जो अप्रशस्त होता है, पाप-प्रकृतियों के साथ बंधा हुआ रहता है या पाप का अनुभाग होता है, वह अनुभाग-बन्ध प्रति समय अनन्त गुणा घटता चला जाता है। इसका नाम एक तरह से क्षयोपशम लब्धि कहा है।

2. विशुद्धि लब्धि- ये लब्धियाँ अन्तर-अन्तर अन्तर्मुहूर्त के लिए होती हैं और एक के बाद एक होती चली जाती हैं। जब क्षयोपशम-लब्धि हो जायेगी तो उसके बाद में विशुद्धि-लब्धि के जब परिणाम आएँगे तब आत्मा में विशुद्धि परिणामों की वृद्धि होगी तो प्रति समय साता आदि जो पुण्य प्रकृतियाँ होती हैं, उनका ही निरन्तर बन्ध होगा। इसको बोलेंगे- विशुद्धि लब्धि। अन्तर्मुहूर्त तक निरन्तर केवल पुण्य प्रकृति का ही बन्ध होना, यह विशुद्ध लब्धि के अन्तर्गत आ जाता है।

3. देशना लब्धि- जिसमें छह द्रव्य, नौ पदार्थों को जानने वाले कोई भी उपदेशक आचार्य आदि हैं उनका सानिध्य मिले या उनकी देशना का लाभ हो तो यह देशना लब्धि के रूप में कहा गया है।

4. प्रायोग्य लब्धि- इस प्रायोग्य लब्धि में जो कर्मों की स्थितियाँ हैं, स्थिति-बन्ध हैं या पूर्वबद्ध कर्मों की स्थिति बन्ध हैं, वह घटकर के कम होते-होते अन्तः कोड़ा-कोड़ी प्रमाण रह जाते हैं। यानी एक कोड़ा-कोड़ी सागर के भीतर ही यह कर्मों की स्थिति बन्ध होने लगे, यह प्रायोग्य लब्धि में ही सम्भव होता है। यानी विशुद्धि निरन्तर बढ़ रही है। उन परिणामों की विशुद्धि से जो भीतर कर्मों के अनुभाग और कर्मों की स्थितियाँ जो घट रही हैं, यही इन

लब्धियों का एक मुख्य कार्य है। अतः प्रायोग्य लब्धि में वह परिणामों की विशुद्धि के कारण से कर्मों की स्थिति जो बन्ध को प्राप्त हो रही हो वह और कर्मों की स्थिति जो सत्ता में पड़ी है वह, दोनों की ही जो स्थिति है वह घटने लग जाती है और वह घटकर के अन्त:कोड़ा-कोड़ी सागर तक हो जाती है। बन्ध तो अन्त:कोड़ा-कोड़ी का होगा लेकिन जो उसका स्थिति का जो सत्त्व है, वह उसमें भी संख्यात हजार सागरोपम और कम हो जाएगा। इस तरह की प्रक्रिया का होने का नाम है- प्रायोग्य लब्धि।

5. करण लब्धि- जिसमें अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण के ये विशिष्ट परिणाम होते हैं। जिन परिणामों के माध्यम से मिथ्यात्व आदि कर्मों का, एक तरह से अन्तःकरण, अन्तर करण आदि के माध्यम से उनकी एक स्थिति और जो अनुभाग है उसमें इतनी कमी लाई जाती है या उन्हें इतना दबा दिया जाता है कि वह एक अन्तर्मुहूर्त के लिए किसी भी तरह से न उदय में आ पाएँ और न वह एक अन्तर्मुहूर्त के लिए उदय के योग्य रह पाएँ, इस तरह की स्थिति बना देने का नाम करण लब्धि कहलाता है।

भव्य-अभव्य जीवों की लब्धि

ये पाँच लब्धियाँ हैं। इनमें से चार लब्धियाँ तो भव्य-अभव्य दोनों जीवों के सम्भव हैं। मतलब भव्य-अभव्य दोनों ही जीव चार लब्धियों तक की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन अभव्य जीवों को करण लब्धि नहीं होगी। करण-लब्धि केवल भव्य जीवों को ही होती है। करण-लब्धि में एक बार अगर आत्मा उन परिणामों में ढल जाती है, उसमें एक बार उन परिणामों की शुरुआत हो जाती है, तो उसका वह कार्य अवश्य ही घटित होता है और उस करण-लब्धि के माध्यम से ही मिथ्यात्व आदि कर्मों का उपशमन हुआ करता है। सबसे पहले सम्यग्दर्शन प्राप्त करने की योग्यता वाला जब कोई भव्य जीव अपने अन्दर सम्यग्दर्शन को प्राप्त करेगा तो उसे इन पाँच लब्धियों की आवश्यकता होती ही है। यानी भीतर पाँच लब्धियों के माध्यम से कार्य प्रति समय अन्तर-अन्तर अन्तर्मुहूर्त में घटित होते रहेंगे और इन्हीं परिणामों के फलस्वरूप उसे सम्यग्दर्शन का लाभ मिलेगा। यह भीतरी प्रक्रिया सैद्धान्तिक प्रक्रिया है और इसी के माध्यम से इन पाँच लब्धियों का वर्णन किया जाता है।

काल भी मुख्यता रखता है

इन पाँच लब्धियों का वर्णन करते हुए आचार्य कहते हैं कि इसमें एक काल-लब्धि भी और जोड़ना चाहिए या काल-लब्धि का भी एक अलग से वर्णन किया जाता है। इसलिए किया जाता है कि जब भी कोई कार्य सम्पादित होता है, तो उसमें काल भी अपनी एक मुख्यता रखता है। वह काल-लब्धि कोई ऐसी काल-लब्धि नहीं होती कि ऐसा होने पर या इस तरह का काल होने पर इस तरह से आपको सम्यग्दर्शन हो ही जाएगा। ऐसा नहीं होता।

आचार्यों ने काल-लब्धि को भी तीन प्रकार से बताया है

एक काल-लब्धि तो वह होती है कि जब हमारा संसार केवल अर्ध-पुद्गल-परावर्तन मात्र रह जाए तो उस समय पर हमारे लिए सम्यग्दर्शन होगा। वह एक प्रकार की पहली काल-लब्धि कही गई है। अगर हम इस काल-लब्धि के बारे में देखे तो सिद्धान्त ग्रन्थ कहते हैं कि संसार कभी भी अपने आप अर्ध-पुद्गल-परावर्तन मात्र नहीं रहता है, उसे करना पड़ता है। अर्ध-पुद्गल-परावर्तन रूप संसार तभी रहेगा जब उसे सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाएगा। जब यह

सिद्धान्त सामने आता है कि सम्यग्दर्शन होने पर संसार अर्ध-पुद्गल बचता है। क्या कहा जाता है सिद्धान्त में? सम्यग्दर्शन प्राप्त अगर हो गया तो उस जीव का संसार कितना बचेगा? अर्ध-पुद्गल-परावर्तन मात्र संसार बचेगा। उस काल में उसके लिए नियम से मोक्ष होगा या उसी काल में शुरू में हो जाए या मध्य में कभी हो जाए या अन्त में तो नियम से होना ही है। इधर जब हम काल-लब्धि का वर्णन करते हैं तो काल-लब्धि का वर्णन किया जाएगा तो काल की मुख्यता से किया जाएगा।

पहली काल लब्धि है- अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल की अवधि शेष रह गयी

जब सम्यग्दर्शन का वर्णन करेंगे तो सम्यक्त्व परिणामों की मुख्यता से होगा। यह कथन की पद्धति होती है कि मुख्यतः हम किसका वर्णन कर रहे हैं? हम उसी को मुख्यता देते हैं। जो लोग स्याद्वाद की इस गौण-मुख्य पद्धति को नहीं जानते, वे लोग भ्रमित हो जाते हैं। कैसे भ्रमित हो जाते हैं? अगर काल-लब्धि का वर्णन किया जा रहा है, तो आपको उसकी परिभाषा में लिखा मिलेगा- 'अर्ध पुद्गल परिवर्तनाख्येकाले वशिष्टे' यानी अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल के अवशिष्ट रह जाने पर, शेष रह जाने पर ही यह जीव सम्यग्दर्शन के योग्य होता है, यह पहली काल-लब्धि है। जब आप यह पढ़ोगे तो आपके दिमाग में क्या आएगा? जब इतना काल बचेगा न! तभी हम सम्यग्दर्शन के योग्य हो पाएँगे, तभी सम्यग्दर्शन की योग्यता आएगी। अगर इससे ज्यादा काल है हमारा तो अभी हम सम्यग्दर्शन के योग्य ही नहीं है। इस तरह का जो विचार आएगा, वह विचार आपके लिए पढ़ने के अनुसार तो ठीक आएगा लेकिन आप यह नहीं समझते कि यह किस विवक्षा से क्या कहा जा रहा है?

काल-लब्धि क्या होता है?

काल-लब्धि का मतलब होता है- जिस समय पर जो काम हो जाए, वही समय उसकी काल-लब्धि कहलाती है। काल से काम नहीं होता लेकिन जिस समय पर जो काम होगा, उसी का नाम काल-लब्धि है। जब हम यह देखते हैं कि जब अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल बचेगा तब हमारे लिए सम्यग्दर्शन होगा कि सम्यग्दर्शन होगा तब अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल बचेगा? यह विचारणीय बात रहती है। जो लोग सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक वगैरह इस ग्रन्थ की टीकाएँ पढ़ते हैं तो उन्हें जब काल-लब्धि का वर्णन लिखा मिलता है, तो इसी रूप में लिखा हुआ मिलता है। तब उनकी धारणा में यह आ जाता है कि देखो! आचार्यों ने लिखा है कि काल-लब्धि का मतलब यह है कि जब अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल अवशिष्ट रह जाएगा तब आपके लिए सम्यग्दर्शन होगा तो अब हम क्या कर सकते हैं?

आचार्यों द्वारा की गयी काल लब्धि की व्याख्या को उल्टा समझना

अगर अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल अवशिष्ट होगा तो सम्यग्दर्शन की योग्यता हो जाएगी तो कार्य हो जाएगा और इससे ज्यादा होगा तो हम कभी भी कोई भी पुरुषार्थ करेंगे, उससे हमको कभी भी सम्यग्दर्शन होने वाला नहीं है। इस तरह से सोच लेते हैं, पढ़ लेते हैं और पढ़ा भी देते हैं। जबकि सिद्धान्त ग्रन्थों की जो व्याख्याएँ हैं, आचार्य वीरसेन महाराज की धवला आदि टीकाएँ तो उसमें वे लिखते हैं कि सम्मद्दंसणपरिणामेहि अत्थपोग्गलपरियट्टणकालोकदो मतलब सम्यग्दर्शन के परिणामों से वह अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल किया जाता है, काल अपने आप नहीं आ जाएगा जो तुम्हें सम्यग्दर्शन करा दे। जब सम्यग्दर्शन के परिणाम होंगे तो

इतना काल अवशिष्ट बचेगा। अगर हम काल-लब्धि का वर्णन कर रहे हैं तो हम ऐसा ही कहेंगे कि जब इतना काल बचेगा तभी आपको सम्यग्दर्शन होगा। समझ आ रहा है? यह काल-लब्धि की अपेक्षा से कहेंगे तो कथन सही है लेकिन अगर हम सम्यग्दर्शन की अपेक्षा से देखेंगे तो सम्यग्दर्शन होने पर ही यह अर्ध-पुद्गल-परावर्तन मात्र काल बचता है, यह आचार्यों का कहना है। इसलिए यह ध्यान रखना काल में काम नहीं होता है; काम होने पर जो काल, जिस समय पर होता है, वही उसका समय कहा जाता है, वही उसकी काल-लब्धि, उस काल की योग्यता कही जाती है।

काल लब्धि समझने के लिया उदाहरण

आप लोगों को बुखार आता है न। Thermometer से नापते हो? क्या नापते हो? बुखार नाप रहे हैं, बुखार किसमें है? शरीर में और नाप किसमें रहे हो? Thermometer में। अच्छा! thermometer में जब आपने बुखार नापा तो उसमें आपने देखा, thermometer में बुखार है कि बुखार आपके शरीर में है? जब हम thermometer में देखेंगे तो हम कहेंगे, इसमें बुखार 99 डिग्री C आ रहा है। हम क्या बोलेंगे? इसमें बुखार 99 डिग्री C आ रहा है। किसमें? thermometer में तो thermometer में बुखार होता है कि बुखार होने पर उस thermometer में 99 डिग्री C पर वह पारा चढ़ता है। बोलो तो ऐसे ही है न! बुखार शरीर में होगा तो वह thermometer में 99-100 डिग्री C तक वह पारा बढ़ता हुआ दिखाई देगा। इसका मतलब क्या है? अगर बुखार शरीर में है, तो ही वह पारा 99-100 तक जाएगा या उसके above जाएगा। जब बुखार होगा तभी तो वह उस thermometer के द्वारा हमें जानने में आएगा, वही हमको बताएगा कि यह बुखार इतना है। thermometer में बुखार नहीं है, thermometer तो बुखार को बताने का एक यन्त्र है। इसी तरह से जब कार्य होगा, सम्यग्दर्शन होगा तो सम्यग्दर्शन होने पर यह बताया जाएगा कि जब सम्यग्दर्शन हो गया तो यह काल अब संसार का अर्ध-पुद्गल-परावर्तन मात्र रह गया। काल होने पर कोई काम नहीं होता। मान लो हमने किसी भी तरीके से thermometer में temperature 100 डिग्री C कर भी दिया। धूप में रख दिया या किसी और तरीके से हमने thermometer का temperature तो 100 डिग्री C कर दिया और फिर आप को लगा दिया तो आपका temperature 100 हो जायेगा? इसी तरीके से काल लब्धि आ गई फिर हमें सम्यग्दर्शन हो गया मतलब हम thermometer लगाने के बाद में सम्यग्दर्शन मतलब बुखार पैदा कर रहा है। जो लोग इस तरह से पढ़ते हैं, समझाते हैं, उन्हें कहीं न कहीं कोई समझाने वाला नहीं मिलता इसलिए वह इस तरीके समझाते हैं। यह मुख्य और गौणता की व्यवस्था होती है लेकिन जब हम thermometer की दृष्टि से देखेंगे तो हम यही कहते हैं, देखो! इसमें 100 डिग्री C बुखार आ रहा है। क्या बोलते है हम? इसमें 100 बुखार आ रहा है। किसमें? thermometer में। इसमें 100 डिग्री C temperature आ रहा है मतलब आप को 100 डिग्री C बुखार है, तो यह किसकी मुख्यता हो गई? यह thermometer की मुख्यता हो गई। यह काल-लब्धि हो गई, काल-लब्धि की मुख्यता हो गयी। अगर काल-लब्धि की मुख्यता से हम कथन करेंगे तो हम ऐसा बोलेंगे और अगर हम अपने temperature की मुख्यता से कथन करेंगे तो हम क्या बोलेंगे? मुझको बुखार था या है इसलिए thermometer में 100 डिग्री C तक यह पारा चढ़ रहा है, कथन की पद्धति समझो। स्याद्वाद! स्याद्वाद! दुनिया चिल्लाती तो रहती है, उपयोग करना किसी को कुछ आता नहीं। स्याद्वाद की शैली को जानने वाले आचार्यों ने कहाँ क्या लिखा है? यह पता भी हमें गुरुओं की कृपा के बिना नहीं मिलता है। यह एक पद्धति है, अगर हम काल-लब्धि की मुख्यता से किसी चीज को देख रहे हैं तो हम यही कहेंगे कि इतना काल रहेगा तो यह

सम्यग्दर्शन होगा। कहना गलत नहीं है लेकिन वह काल-लब्धि की मुख्यता से कथन है। कभी भी आप जब ऐसा सुने कि काल-लब्धि आएगी तो काम हो जाएगा। ऐसे लोगों से हाथ जोड़ना, कहना, तुम काल-लब्धि का इन्तजार करो, हम अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं। इस तरह पहली प्रकार की काल-लब्धि बताई।

दूसरी काल लब्धि- जब मध्यम स्थिति का बन्ध होगा

दूसरी काल-लब्धि होती है- जब हमारे कर्मों की स्थितियाँ, भीतर जो हमारे कर्मों की स्थिति, सत्त्व और बन्ध पड़े होते हैं। अगर वह जघन्य-स्थिति में बन्ध रहे होंगे या उत्कृष्ट-स्थिति में बन्ध रहे होंगे तो भी आचार्य कहते हैं- ऐसी स्थिति में कभी भी सम्यग्दर्शन नहीं होगा। सम्यग्दर्शन कब होगा? जब मध्यम-स्थितियों के बन्ध हो रहे होंगे। उत्कृष्ट-स्थिति का बन्ध होगा तब तो आदमी का बहुत temper बहुत high होगा और जब बिल्कुल low स्थिति का बन्ध होगा तब उसके लिए इस तरीके की योग्यता ही नहीं होगी। एकेन्द्रिय आदि में ऐसी स्थिति का बन्ध होता है, तो उसमें भी सम्यग्दर्शन नहीं होता। वह सम्यग्दर्शन कब होगा? जब मध्यम स्थिति का बन्ध होगा। यह दूसरी काल-लब्धि है। काल-लब्धि का मतलब है कि आप किसी न किसी तरीके से यह जाने कि आपका कौन सा समय सम्यग्दर्शन के योग्य है?

तीसरी काल-लब्धि की योग्यता

उसको आचार्यों ने तीन रूपों से व्याख्यायित किया है- एक तो अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल के साथ में, दूसरा कर्मों की स्थिति मध्यम रह जाए तब और एक तीसरा बताया कि जब कोई जीव भव्य हो, संज्ञी पंचेन्द्रिय हो, विशुद्धि से सहित हो, जागृत हो, पर्याप्तक हो तभी वह सम्यग्दर्शन के योग्य होता है। यह तीसरी काल-लब्धि है। अब इन तीनों ही काल-लब्धियों को अगर हम देखें तो कोई भी काल-लब्धि ऐसी नहीं है, जिसके हो जाने पर अपने आप सम्यग्दर्शन हो जाता हो। यह तो योग्यता बताई गई और जब ऐसा होगा तब इसकी योग्यता अवश्य ही होगी। देखो! अगर हम उसी अर्ध-पुद्गल-परावर्तन वाली काल-लब्धि को समझने के लिए अगर हम दूसरी वाली तो हमारी समझ में आ नहीं सकती कि कब जघन्य स्थिति का बन्ध हो रहा है, कब उत्कृष्ट हो रहा है? यह तो हमारे ज्ञान का विषय है नहीं तो चलो ठीक है! इसको तो हमने छोड़ दिया।

Class 05

तीसरी जो काल-लब्धि है- भव्य होना चाहिए, संज्ञी होना चाहिए, पर्याप्तक होना चाहिए, पंचेन्द्रिय ही होना चाहिए, विशुद्ध होना चाहिए, जागृत होना चाहिए। ये जितनी भी योग्यताएँ हैं, ये योग्यताएँ तो संसार में तमाम पंचेन्द्रिय जीवों को मिली रहती हैं। किन-किन को सम्यग्दर्शन हो जाता है? कितने ही भव्य-जीव देव गति में, नरक गति में, मनुष्य गति में, तिर्यंच गति में हैं। कितने ही संज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव हैं? कितने ही पर्याप्तक जीव हैं? कितने ही विशुद्धि से युक्त हैं? क्या सबको सम्यग्दर्शन हो जाता है? यह हमें जब जानने में आ जाता है, तो हमें समझ लेना चाहिए कि यहाँ काल-लब्धि का मतलब सिर्फ एक योग्यता बताना है। ऐसा नहीं है कि ऐसा होने पर नियम से सम्यग्दर्शन हो ही जाएगा। भव्य-जीव होगा तो ही वह सम्यग्दर्शन के योग्य होगा लेकिन सभी भव्य हो

गए तो सम्यग्दर्शन है, तो क्या सभी को हो जाए सम्यग्दर्शन क्योंकि भव्य तो अनन्त जीव है। संज्ञी-पंचेन्द्रिय असंख्यात जीव हैं, सबको हो जाए सम्यग्दर्शन। पर्याप्तक सभी हैं, विशुद्ध सभी हैं, जागृत सभी रहते हैं, कौन सा हमेशा सब सोते रहते हैं? ज्ञानोपयोग के साथ हमेशा सभी रहते हैं तो ये सारी योग्यताएँ तो सामान्य योग्यताएँ हैं। इन योग्यताओं से सम्यग्दर्शन नहीं होता लेकिन सम्यग्दर्शन होगा तो इन योग्यताओं के होने पर ही होगा। उनके लिए इस तरीके का योग्य-व्यक्ति होना चाहिए। यह कई बार लोगों के पढ़ने में आता है लेकिन लोग इसको समझ नहीं पाते हैं तो काल-लब्धि को भी समझे और पाँच-लब्धियों को भी समझे।

गोटेगाँव चातुर्मास में पंच लब्धि की गोष्ठी

बहुत पहले हमने इसके विषय में एक चिन्तन दिया था। शायद 2012 में जब मेरा गोटेगाँव में चातुर्मास था। तब बहुत अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे ब्रह्मचारी लोग सामने आए थे और ब्रह्मचारियों के लिए ही यह गोष्ठी हुई थी। उसमें यह पंच-लब्धि का विषय ही हमने उनको तीन-चार दिन तक परोसा था और उनमें से कुछ ब्रह्मचारी जो आज-कल मुनि महाराज भी बन गए हैं। जो संघ में ब्रह्मचारी पवन, ब्रह्मचारी कमल थे, वे अब निर्दोष सागर और निर्लेप सागर महाराज है। ये सभी जो ब्रह्मचारी हैं, ये भी पहले उस संगोष्ठी में आए थे और उस समय पर हमने पंच-लब्धि का बहुत अच्छा व्याख्यान किया था। वह व्याख्यान आपको आज भी आपके mobile पर मिल जाएगा क्योंकि जो चीज एक बार upload हो गई है, तो वह तो पड़ी रहती है। अगर आप को वह चिन्तन पंच-लब्धि और काल लब्धि का सुनना हो। अब हम ये सोचे कि पंच-लब्धि का जब आचार्यों ने वर्णन किया है। यह काल लब्धि अलग से कहाँ से आ गयी।

एक काल-लब्धि अलग से कहाँ से आ गई?

पाँच लब्धियों में काल-लब्धि तो कोई चीज ही नहीं है। जब पाँच लब्धि सम्यग्दर्शन के लिए नियामक हैं तो काल-लब्धि का अलग से वर्णन किस तरह से पंच-लब्धि से संगत बैठता है? इसकी समायोजन के लिए आपको वही प्रवचन सुनना पड़ेगा। मैं अभी आपको नहीं बता पाऊँगा। हाँ! आप फुर्सत में बैठकर सुनना, पंच-लब्धि के नाम से आपको YouTube वगैरह पर ये प्रवचन मिलेंगे। तब आप समझेंगे कि यह काल-लब्धि को भी हम एक तरह से सामान्य लब्धियाँ समझे और ये सभी लब्धियाँ इन पंच-लब्धियों में गर्भित हैं। क्षयोपशम आदि में ये लब्धियाँ सभी गर्भित हो जाती हैं तो इन पाँच लब्धियों के माध्यम से जब हमें लब्धि की प्राप्ति होती है, तो उस सम्यग्दर्शन के माध्यम से ही हमें यह पता चलता है कि यह जो काल रह गया है, वह अब केवल अर्ध-पुद्गल-परावर्तन मात्र काल रह गया है।

सम्यग्दृष्टि का संसार में अनन्त से घटकर अर्ध-पुद्गल-परावर्तन प्रमाण रह जाएगा

इसको बोलते हैं- एक बार जिसको सम्यग्दर्शन को प्राप्ति हो गई, उसका संसार अनन्त से घटकर केवल अर्ध-पुद्गल-परावर्तन प्रमाण रह जाएगा। जो पुद्गल-परावर्तन थे, वह हम अनन्त कर चुके, उनमें केवल एक पुद्गल-द्रव्य-परावर्तन का भी आधा रह जाता है, उसका नाम है- अर्ध-पुद्गल-परावर्तन। इस तरह से यह कहा जाता है कि सम्यग्दर्शन के माध्यम से अनन्त संसार घटकर के अब तो यह केवल चुल्लू भर रह गया। क्योंकि अनन्त संसार तो अब नहीं बन्धा और सम्यग्दर्शन होने के बाद में इतनी योग्यता आ जाती है कि वह फिर अनन्त

काल तक संसार में नहीं रहेगा। यद्यपि यह जो अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल है, यह भी बहुत बड़ा है। क्योंकि हम लोगों के ज्ञान की अपेक्षा से पुद्गल-परावर्तन का आधा, यह भी एक तरीके से देखा जाए तो अनन्त ही है। लेकिन केवली सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान की अपेक्षा से यह सीमित है, इसलिए इसको अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल कहा जाता है। यह काल अनन्त होते हुए भी बहुत सीमित कहा गया है, यह भी बहुत-बड़ा काल है। अब आपको बड़ा तो तब दिखेगा जब संसार में परिभ्रमण बहुत दुःखकारी समझ में आ रहा हो। अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल भी बहुत बड़ा काल है मतलब यह भी अनन्त काल है।

अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल भी बहुत-बड़ा संसार है

आप एक अन्दाजा लगाएँ कि मरीचि का जीव जो भगवान आदिनाथ के समय पर था और उस जीव ने वहाँ से मिथ्यात्व का पोषण करना प्रारम्भ किया तो भटकते-भटकते उसकी लब्धि फिर कब आई? चौथे काल के प्रारम्भ से भी पहले मतलब तृतीय काल के अन्त में जब आदिनाथ भगवान हुए, उस समय पर वह मरीचि का जीव था। पूरा चौथा काल निकल गया, बयालीस हजार वर्ष कम एक-कोड़ा-कोड़ी सागर का होता है चौथा काल। इतने समय तक वह जीव भटकता रहा। जब इतना ही काल इतना बड़ा दिखाई दे रहा है, तो अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल तो बहुत-बड़ा संसार है। सम्यग्दर्शन के बाद भी जो लोग प्रमादी बन जाते हैं, वह इतने अनन्तकाल तक भटकते रहते हैं लेकिन शास्त्रों में लिखा है कि उसे अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल के अन्त में जरूर उसकी बुद्धि अनुकूल हो जाएगी और उसके लिए नियम से मोक्ष का लाभ मिलेगा तो भी आप लोगों को निश्चिन्त नहीं बैठना चाहिए। प्रमादी नहीं होना चाहिए।

हमें प्रमादी नहीं होना चाहिए

क्योंकि आपके लिए तो अभी पता ही नहीं है कि सम्यग्दर्शन हुआ कि नहीं हुआ? यह तो उनके लिए जिनका सम्यग्दर्शन केवली भगवान ने कह दिया हो या अवधिज्ञानी किन्हीं महाराज ने कह दिया हो कि हाँ! भैया! तेरे लिए एक बार सम्यग्दर्शन हो गया। अब हो गया तब तो ठीक भी है कुछ। लेकिन ऐसा जीव भी प्रमाद नहीं करता तो जिसके लिए सम्यग्दर्शन का नियम नहीं हुआ तो वह जीव प्रमाद कैसे कर सकता है? बहुत से लोग इसी खुशी में प्रमादी बने रहते हैं कि हमें सम्यग्दर्शन हो गया। आज तत्त्व का निर्णय हो गया इसलिए अब हमें कोई भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे इस सम्यग्दर्शन के कारण से संसार केवल चुल्लू भर रह गया। सम्यग्दर्शन हो गया मतलब सब हो गया, अब हमें कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। अन्तरंग में सब तरह का प्रमाद-चारित्र के प्रति, व्रत के प्रति, संयम के प्रति, यह सब प्रमाद ही उनको खा जाता है। हमने मान लिया उन्हें पता नहीं होता क्योंकि सम्यग्दर्शन का कोई निर्णय तो हुआ नहीं है। क्यों मान लिया?

पण्डित लोग मान लेते हैं कि उनको तो सम्यग्दर्शन निश्चित होगा

पढ़ाते-पढ़ाते, पढ़ते-पढ़ते बीस साल हो गए। सब पण्डित जी, पण्डित जी कह रहे हैं, जब इतने लोगों को हम पढ़ा चुके तो हमको तो सम्यग्दर्शन होगा ही। ऐसा सोच कर के कई लोग प्रमादी बने बैठे रहते हैं। सम्यग्दर्शन के आगे किसी भी तरीके की सम्यग्चारित्र की भावना आदि तो उनके लिए जैसे उनके course में ही नहीं। यह समझ लो! वह उनके course का विषय ही नहीं, उनको उस बारे में सोचना ही नहीं। इस तरह के लोगों का कोई भी ठिकाना

नहीं है क्योंकि सम्यग्दर्शन के बाद भी जब अनन्त काल इतना बड़ा है, तो जिनको सम्यग्दर्शन की कोई guarantee नहीं है, तो आप सोचे कि वह अनन्तकाल कितना और होगा?

जो सम्यग्चारित्र की आराधना करता है वह सब की आराधना कर लेता है।

जब हमें एक कोड़ा-कोड़ी सागर का काल इतना बड़ा दिखाई दे रहा है, आदिनाथ भगवान से लेकर अन्तिम वह मरीचि का जीव ही अन्त में जाकर के सुलझा, तीर्थंकर बना वर्धमान महावीर भगवान का जीव बना। अतः समझो कि एक कोड़ा-कोड़ी सागर मतलब असंख्यात वर्षों का यह काल हो गया और भटकता रहा। इस तरह की स्थिति को जान कर के कभी भी किसी भी जीव को भीतर से प्रमादी बनकर यह नहीं सोचना कि बस सम्यग्दर्शन होने पर ही सब कुछ हो जाएगा, course आगे का करो। जैसे- बच्चों से कहा जाता है, बेटा 12th तो करना है लेकिन आगे IIT करना है, तो पहले IIT की भी तैयारी साथ में करो। पहले 12th तो कर ले, IIT बाद में कर लेंगे। नियम भी यही है कि जब 12th करोगे तभी IIT का exam दे पाओगे लेकिन पहले तैयारी तो IIT की करनी पड़ती है और साथ में 12th की भी हो जाती है। जब 12th पास हो जाओगे तभी जाकर के IIT का exam देने के योग्य बन पाओगे। क्योंकि आपने तैयारी पहले से की है, तो आपको कुछ आएगा वहाँ पर, इधर तो हम ऐसा करते हैं। कैसा? बच्चों को पढ़ाने के लिए तो हम ऐसा करते हैं, आठवीं से ही पढ़ाने लग जाते हैं। IIT पढ़ना है बेटा इसलिए ये books पढ़, ये coaching कर, ये course कर, ये कर और इधर जब सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की बात आती है, तो पहले सम्यग्दर्शन कर लो, सम्यग्चारित्र तो बाद में आएगा। बाद में क्या अगले जन्म में आएगा?

सम्यग्चारित्र पर केन्द्रित होने से सम्यग्दर्शन तो स्वतः हो जायेगा

अरे भाई! वह course है, अगर आपका सम्यग्चारित्र पर focus हो जाएगा, सम्यग्दर्शन तो करके अपने आप आपके अन्दर सम्यग्चारित्र आ ही जाएगा और अगर आप बड़ी चीज पर focus करोगे तो उससे पहले मिलने वाली चीज तो आपके अन्दर आ ही जाएगी। अगर आप IIT के question solve करने लग गए, IIT किताबें पढ़ने लग गए तो 12th पास करना और 8th पास करना, आपके लिए कौन-सी बड़ी बात होगी? नहीं समझ आ रहा है? वहाँ तो हम IIT की तैयारी 11th,10th के बाद ही शुरू कर देते हैं, कभी-कभी तो 8th के बाद ही शुरू हो जाते हैं। बाकि सब उसके parallel में होता रहेगा और इधर पहले सम्यग्दर्शन! पहले सम्यग्दर्शन! अरे भैया! सम्यग्दर्शन का तुमको कौन-सा टीका लगेगा। अतः सम्यग्चारित्र की आराधना करने वाला सम्यग्दर्शन की भी आराधना कर लेता है, सम्यग्ज्ञान की भी आराधना कर लेता है इसलिए भगवती आराधना आदि ग्रन्थों में कहा है, जो सम्यग्चारित्र की आराधना करता है वह सब की आराधना कर लेता है।

सिर्फ सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान की आराधना करने से सम्यग्चारित्र की भी आराधना हो यह आशय नहीं

लेकिन जो सम्यग्दर्शन की आराधना कर रहा है, उसके लिए नियम नहीं कि वह सम्यग्चारित्र की भी आराधना करे या सम्यग्ज्ञान की भी आराधना करे। ये बातें आज कल लोगों को कहीं से कहीं तक पता नहीं क्यों बुद्धि में जाती नहीं? कौन-सा उसने अपनी बुद्धि में बिल्कुल, shield लगा रखी है कि किसी के अन्दर कोई भी चीज कहीं fit ही नहीं होती। सब को बस थोड़ा-सा भी कोई पढ़ लेगा सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यग्चारित्र तो सबसे पहले क्या? सम्यग्दर्शन तो कर लो। अब कब कर लो? कैसे कर लो? कैसे पता पड़ेगा कि आपको सम्यग्दर्शन हो गया?

काल-लब्धि आ चुकी? कैसे पता पड़ेगा आपको अर्ध-पुद्गल-परावर्तन काल रह गया? कैसे पता पड़ेगा कि आपके अन्दर पाँचों लब्धियाँ हो गई? अन्तःकरण के परिणाम हो गए, कैसे पता पड़ेगा? क्या है उसकी अनुभूति? कुछ नहीं है।

पण्डित लोग सही मार्ग से वंचित करते हैं

ये लोग अपने तरह से, इस तरह से अपने ढंग का, एक अलग तरीके का ढिंढोरा पीटते रहते हैं और लोगों को जो सही मार्ग है, उससे भी गाफिल करते रहते हैं। यह काम किसने शुरू किया? घर बैठे हुए पण्डितों ने यह काम शुरू किया क्योंकि उन्हें घर पर बैठना है, चारित्र लेना नहीं है और घर पर बैठे-बैठे सब ग्रन्थ पढ़ना है। अतः उन्होंने ही इस तरीके की बातें करना शुरू की और उन्हीं को follow करने वाले अनेक गृहस्थ भी हो गए। समझ आ रहा है? जबकि यह तरीका ही नहीं है।

सम्यग्चारित्र के साथ निश्चित रूप सम्यग्दर्शन से आएगा

अगर आपके अन्दर सम्यग्दर्शन आएगा तो आप यह मान करके रखे कि सम्यग्चारित्र भी आपके पास में जरूर होगा क्योंकि सम्यग्दृष्टि के पास में सम्यग्चारित्र की तीव्र भावना होती है। अब जिन्दगी-भर से आप गा रहे हो, सम्यग्दृष्टि! सम्यग्दृष्टि! सम्यग्दृष्टि! और सम्यग्चारित्र को देख कर आपका मुँह बन जाता है। काहे की सम्यग्दृष्टि? समझ में रहा है? बुरा नहीं मानना, समझने की कोशिश करना। यह जो हम एकान्त धारणा बना कर जी रहे हैं कि पहले सम्यग्दर्शन-फिर सम्यग्चारित्र, ऐसा क्या है? यह तो course है, अगर आप आगे वाला course पहले से करने की हिम्मत करोगे तो उसके साथ पिछले वाला course तो हो ही जाएगा। क्या बड़ी बात है? अगर आपने तीर्थंकरों की इस बात पर श्रद्धान करके, गुरुओं की बात पर श्रद्धान करके, सम्यग्चारित्र धारण कर लिया तो सम्यग्दर्शन तो आपको इसी बात से हो जाएगा कि आपके अन्दर इतना बड़ा श्रद्धान है कि आपने अपनी सब कुछ चीजें दांव पर लगा दी और केवल एक बार विश्वास के साथ में आपने सम्यग्चारित्र को धारण कर लिया मतलब सम्यग्दर्शन के बिना इतना विश्वास कैसे आएगा आपको? और ज्ञान के लिए तो जिन्दगी पड़ी है, पढ़ते रहना-सुनते रहना तो यह भी एक तरीका है, यह गलत नहीं है।

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने पंच-लब्धियों को **train** के उदहारण से समझाया

फिर यह समझे कि यहाँ पर जो उपशम-सम्यक्त्व बताया जा रहा है, यह प्रथमोपशम सम्यक्त्व हमेशा पंच-लब्धि के माध्यम से प्रारम्भ होता है और इसमें कोई भी लब्धि यदि है, तो वह हमारे ज्ञान में आ पाए, यह जरूरी नहीं है और आती भी नहीं है। आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, जो गुरु महाराज के भी गुरु महाराज हुए हैं, उन्होंने एक सम्यक्त्व-सार-शतक के नाम से एक ग्रन्थ लिखा है। उसमें उन्होंने उसकी हिन्दी व्याख्या में एक बहुत अच्छा उदाहरण पंच-लब्धियों को समझाते हुए दिया है। जैसे- मान लो आप train और उसकी पटरियों को देखते हो जिस पर train चलती है। train के डिब्बे या पूरी train तो हो गई एक तरीके से मोक्ष का मार्ग, अब वह आपको मोक्ष में ले जाएगी। काल-लब्धि चाहिए! चलो ठीक है! मान लेते हैं काल-लब्धि चाहिए तो काल-लब्धि कैसी होती है? वह समझाते हुए कहते है- देखो! जो पटरियाँ बिछी हुई हैं, यह काल-लब्धि है। जो पटरियाँ बिछी हुई हैं, यह क्या हैं?

काल-लब्धि है। फिर आगे वह समझाते हुए कहते हैं कि देखो! इस train को अगर हमें आगे बढ़ाना है, तो इसमें हम क्या देखे?

क्षयोपशम-लब्धि- इसमें कम से कम जैसे- मान लो engine है, तो उस engine के नीचे दो पहिये तो होने ही चाहिए। अगर पटरियाँ बिछी है, तो उसमें जो उसके पहिये हैं, वह हो गई उसकी क्षयोपशम-लब्धि।

विशुद्धि लब्धि- पटरी की बाधाएँ दूर करना

फिर कहते हैं- विशुद्धि-लब्धि, विशुद्धि-लब्धि में क्या होगा? आप जो उस engine को देख रहे हो, उसके अन्दर आगे बढ़ने की जो क्षमता है और उसके अन्दर जो किसी भी तरीके का सामने कोई व्यवधान नहीं आना, इसके लिए आगे जो है, एक instrument जैसा लगा रहता है। पटरी पर आगे-आगे वह जैसे फावड़ा type का होता है न! वह आगे-आगे लगा रहता है, वह आगे-आगे सब बाधाएँ दूर करता चला जाता है। पटरी पर अगर कोई छोटी-मोटी कुछ चीजें पड़ी हो, वह सब हटाता चला जाता है, वह एक तरीके की क्या है? विशुद्धि-लब्धि। आगे-आगे का रास्ता check करते जाना, आगे-आगे का रास्ता बिल्कुल clear रखना, जहाँ पर हमें अपने engine को दौड़ाना है। इसका नाम क्या हो गया ?विशुद्धि-लब्धि।

देशना लब्धि- गाड़ी चलने वाली है

देशना-लब्धि, देशना-लब्धि क्या है? जो आप के लिए सीटी बज रही है कि गाड़ी अब चलने वाली है, यह हो गई देशना-लब्धि। सीटी तो आज-कल भी बजती होगी? electricity से चलती है, इनमें सीटी बजती है कि नहीं बजती? हाँ! कोई न कोई signal तो होता ही होगा, signal किसी न किसी तरीके का मतलब गाड़ी को start होने के लिए, बस! तो वह हो गयी देशना लब्धि।

प्रायोग्य-लब्धि - भाप बनने का नाम है

अब प्रायोग्य-लब्धि क्या है? जो उस engine के अन्दर जो boiler है, जहाँ पर भाप बनती है। वह उसका जो boiler है, उसमें जो हम निरन्तर process कर रहे हैं। उसको पहले बहुत गर्म किया जाता है, उसको मैंने भी अन्दर जा कर एक बार देखा। उसको बहुत heated किया जाता है। पहले उसके अन्दर खूब-खूब सारा material भरा जाता है, खूब उसके अन्दर आग पैदा की जाती है, फिर उसमें भाप बनती है। उसके बाद उसमें jerk लगता है, भाप बनने का नाम है, यह पूरा का पूरा हो गया- प्रायोग्य-लब्धि।

करण-लब्धि- गाड़ी चलना शुरू होना

अब करण-लब्धि- the rail has started. अब वह गाड़ी जब start हो गई तो इसका नाम है- करण-लब्धि। जैसे ही start होगी, एक झटका आपको पीछे की ओर भी लगेगा, फिर वह गाड़ी चलना शुरू हो जाएगी। बैठे हो कि नहीं train में कि plane में ही बैठते रहते हो? यह जो start होना है, अगर start हो गयी एक बार तो ऐसा नहीं कि वह बार-बार रुकती है। अब जो है वह इतनी अच्छी express गाड़ी होती है कि वह अब कम से कम अपने अगले station से पहले नहीं रुकेगी। बस! ये उसके station हो गए- अधः प्रवृत्तकरण, अपूर्वकरण, अनिर्वृत्तिकरण। ऐसी

fast express है कि ये तीन स्टेशनों को पार करने के बाद ही शान्त होगी, रुकेगी। इस तरह से यह गाड़ी का उदाहरण देकर आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज ने हमें पाँच-लब्धियों को समझाया।

Class 06

अब आप समझ लो काल-लब्धि क्या है? और बाकी की पाँच-लब्धियाँ क्या हैं?

अध:करण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण परिणामों की उत्पत्ति

जिन लब्धियों के बारे में कई लोग पूछते रहते हैं, महाराज! पाँच-लब्धि समझा दो, सुना दो। भैया! जब प्रसंग आएगा, समय आएगा तभी समझाएँगे। हर चीज को समझने की काल-लब्धि भी आनी चाहिए। अब यह काल-लब्धि आई, इसलिए हम आपको समझा पा रहे हैं तो इस तरह से आप इन पाँच-लब्धियों का वर्णन सुनने के बाद यह समझना कि ये हमारी योग्यताएँ हैं, जिनसे हमें सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। अब इन पाँच-लब्धियों में एक छोटी-सी बात आगे और आपको बताना है कि जैसे- ये अध:करण, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, जो तीन परिणाम हैं, ये तीन परिणाम हमारे लिए कई बार तब-तब होंगे, जब-जब हम कुछ असंख्यात-गुणी निर्जरा वाला कोई विशेष कार्य करेंगे। क्योंकि यह तो उपशम-सम्यग्दर्शन के साथ हो गया।

द्वितीयोपशम-सम्यग्दर्शन

जब हम श्रेणी के सम्मुख होते हैं तब हम द्वितीयोपशम-सम्यग्दर्शन करेंगे। उपशम-श्रेणी पर चढ़ने वाला जीव या तो उपशम-सम्यग्दृष्टि होगा या क्षायिक-सम्यग्दृष्टि होगा। क्षयोपशम-सम्यग्दृष्टि कभी श्रेणी पर चढ़ नहीं सकता तो उस समय पर जिसके लिए क्षायिक-सम्यग्दर्शन की योग्यता नहीं है, तो वह जीव जो क्षयोपशम-सम्यग्दृष्टि है, वह उपशम-श्रेणी चढ़ने से पहले सप्तम गुणस्थान में अपने सम्यग्दर्शन को फिर से उपशम-सम्यग्दर्शन करता है, जिसका नाम है- द्वितीयोपशम-सम्यग्दर्शन तो उस समय पर भी ये करण-परिणाम होंगे।

तीन करण परिणाम किसके लिए चाहिए?

अगर हम क्षायिक-सम्यग्दर्शन कभी प्राप्त करेंगे तो उसके लिए भी यही अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, ये तीन विशिष्ट परिणाम होते हैं। यह हमेशा बड़े-बड़े कामों में किए जाते हैं। कभी detail इसकी आएगी तब आगे और बताएँगे। तत्त्वार्थ-सूत्र के नौवें अध्याय में इसकी detail आएगी। असंख्यात-गुणी कर्म-निर्जरा के वह दस स्थान बताये जाएँगे तब आपको उसके detail बताएँगे। अभी एक सामान्य से जानकारी है और भी कई काम होते हैं। उपशम-श्रेणी पर चढ़ने में, चारित्र-मोहनीय का उपशमन करना है, तो उसके लिए भी ये करण चाहिए।

चारित्र-मोहनीय का क्षय करना है, तो उसके लिए भी ये करण-परिणाम चाहिए। ये तीन करण परिणाम इस तरह से विशेष रूप से जानना।

नई-छहढाला में गुणस्थान का अच्छा वर्णन है

जैसे उपशम-सम्यक्त्व के बारे में जाना, ऐसे ही औपशमिक-चारित्र यह कहाँ होगा अब? उपशम-सम्यक्त्व होते ही उस आत्मा का गुणस्थान पहले से चौथा भी हो सकता है, पहले से पाँचवाँ भी हो सकता है और पहले से सातवाँ भी हो सकता है। अभी तक तो यही सुना था कि उपशम-सम्यग्दर्शन होने पर पहले से चौथा ही होता है। नई-छहढाला पढ़ो। उसमें तीसरी-ढ़ाल पढ़ना, उसमें आपको गुणस्थान का अच्छा वर्णन मिलेगा। उसके माध्यम से आपको समझ में आएगा कि केवल पहले गुणस्थान से चौथे गुणस्थान की प्राप्ति के समय उपशम-सम्यग्दर्शन नहीं होता, उपशम-सम्यग्दर्शन के साथ हम पहले गुणस्थान से direct सातवाँ भी प्राप्त कर सकते हैं।

उपशम-सम्यग्दर्शन के साथ में सातवाँ गुणस्थान भी हो सकता है

वैसे ही जैसे अभी बता रहा था कि जो सीधा सम्यग्चारित्र का course अपना लेते हैं तो सम्यग्दर्शन तो उनके साथ हो ही गया। जिन्होंने देश संयम वाला सीधा course पकड़ लिया तो सम्यग्दर्शन का course तो उससे पहले का वह तो हो ही गया। यह कोई नियम नहीं है, जो आपने सुन रखा है और आपको पण्डितों ने पढ़ा रखा है कि पहले सम्यग्दर्शन कर लो फिर कुछ होगा। यह सिद्धान्त ऐसा है ही नहीं, यह तो एकांकी एक दृष्टिकोण है। पहले से चौथा गुणस्थान होता है, दुनिया में यह दृष्टिकोण तो बताया जा रहा है लेकिन यह नहीं बताया जा रहा कि पहले से direct पाँचवा भी होता है, पहले से direct सातवाँ भी होता है, यह भी सिद्धान्त है। कैसे होगा? इसी तरीके से होगा। जो महाव्रतों को direct धारण कर रहा है, उसका सम्यग्दर्शन हो ही गया। उसने गुरु के ऊपर श्रद्धा कर ली, इन्हीं व्रतों से मेरा कल्याण होगा इसी का नाम सम्यग्दर्शन और कुछ नहीं चाहिए ज्यादा-से-ज्यादा। इस तरह से उपशम-सम्यग्दर्शन के साथ में चौथा गुणस्थान भी है, उपशम-सम्यग्दर्शन के साथ में पाँचवाँ भी है और उपशम के साथ में सातवाँ भी है, यह सब प्रथमोपशम के साथ में घटित हो रहे हैं।

औपशमिक चारित्र आठवें से ग्यारहवें गुणस्थान में होगा

अगर हम उपशम-चारित्र देखेंगे तो उपशम-चारित्र जो होगा वह आठवें गुणस्थान से माना जाएगा। औपशमिक-चारित्र कहाँ से माना जाएगा? आठवें गुणस्थान से तो आठवाँ, नौवाँ, दसवाँ और ग्यारवाँ ये चार गुणस्थानों में यह औपशमिक चारित्र होगा। जो यहाँ लिखा है- 'सम्यक्त्व चारित्रे।' इस सूत्र की व्याख्या अब पूर्ण होती है। इसके अलावा कोई द्वितीयोपशम-सम्यग्दर्शन है, तो वह आपको मैं बता चुका हूँ कि वह जो है द्वितीयोपशम-सम्यग्दर्शन, वह सप्तम गुणस्थान में जब श्रेणी के अभिमुख होगा तब होगा। जो उपशम श्रेणी के अभिमुख होगा, उसके लिए होगा। इस तरह से इस उपशम-सम्यक्त्व और उपशम-चारित्र, ये सभी जो औपशमिक-भाव हैं, इनके गुणस्थान, इनकी व्यवस्थाएँ, ये आपके ज्ञान में अच्छे ढंग से बैठ जाना चाहिए। एक बार न बैठी हो तो बार-बार सुन-सुन करके भी बिठाने की कोशिश कर लेना क्योंकि आपका ज्ञान अब तो आपकी जेब में रखा हुआ है।

अंजन चोर का श्रद्धान

जो गृहस्थ हैं, वह चौथे-पाँचवें गुणस्थान तक ही जा सकते हैं। जो दीक्षा लेते हैं, direct उनका सातवाँ गुणस्थान हो जाता है। ऐसे कितने पुराणों में घटनाएँ हैं। मुनि महाराज को देखा, मुनि महाराज के सामने पहुँचे, उन्हें कुछ नहीं आता। मान लो अंजन चोर था, सीधा उसको विद्या सिद्धि हुई, सीधा सेठ जिनदत्त के पास पहुँच गया, जिनदत्त सेठ सीधा उसको मुनि महाराज के पास ले गया। उसको श्रद्धा बैठ गई कि जब मैं जिनदत्त सेठ की बात से मरने से बच सकता हूँ और आकाशगामिनी विद्या मुझे सिद्ध हो सकती है, तो यह मेरे लिए कभी गलत होगा ही नहीं। अगर यह कह रहा है कि मुझे अनन्त-सुख इस तपस्या से मिलेगा तो मिलेगा। फिर मैं क्यों इन छोटे-छोटे सुखों के पीछे पड़ूँ। वह सीधा कहता है, बताओ! मेरी आत्मा का कल्याण कैसे होगा? चल! तुझे महाराज के पास ले चलते हैं और वह सीधा महाराज के पास ले गया। महाराज ने कहा- जब तक तू सब परिग्रह नहीं छोड़ेगा, मेरी तरह बिल्कुल निर्विकल्प होकर के ध्यान नहीं करेगा तब तक तेरे को कुछ नहीं होने वाला! ठीक है! उसने बात कही पक्की। अंजन चोर है, एक रात पहले वैश्या के पास था, चोरी कर रहा था और दूसरे ही दिन सुबह, वह पहुँच गया सुमेरू पर्वत पर और वहाँ पर जो मुनि महाराज बैठे ऋद्धिधारी, उनके सामने दीक्षा ले रहा है, इसी को बोलते हैं- "जो कम्मे-सूरा सो धम्मे-सूरा।"

सिर्फ सम्यग्दर्शन की बातें करने से कुछ नहीं होगा

तुम जैसे घर में रहने वाले बनिया लोगों का यह काम ही नहीं है इसलिए तुमने सारे ग्रन्थों को पढ़-पढ़ कर के, पढ़-पढ़ कर के, उनकी जो है ऐसी छँटाई कर डाली कि जितने भी कपड़े वाले सारे-के-सारे पण्डित हैं उल्टा ज्ञान देने लगे। बुरा नहीं मानना। हाँ! आजकल लोग बुरा भी बहुत जल्दी मान जाते हैं, क्षमा का दिन है। इसलिए कहना पड़ता है कि जब एक ही धारा में सब बहे जा रहे हैं, हमारी कोई सुन ही नहीं रहा तो समझो कि direct जब उस अंजन चोर को दीक्षा हो रही है, उसको सम्यग्चारित्र हो रहा है, तो सम्यग्दर्शन है नहीं उसके पास में? तत्त्व निर्णय तो है ही नहीं, तत्त्व की अभी सात तत्त्वों का ज्ञान तो है ही नहीं। अरे! यही ज्ञान है। समझ आ रहा है? पहले दिन सब बता चुका हूँ- जो गुरु के वचनों पर, अरिहन्त भगवान की वाणी पर विश्वास रखता है, उसे सप्त-तत्त्वों का ज्ञान होता है और तुम तत्त्व का ज्ञान करते रहो-कराते रहो, कुछ नहीं होने वाला क्योंकि तुम्हें गुरुओं पर श्रद्धा नहीं और तुम्हें चारित्र देख करके, तुम्हारे भाव कभी कुछ चारित्र के बनते नहीं। हाँ! बुरा लगे तो लग जाए, जिनवाणी के विरुद्ध तो नहीं बोल रहा न! बस! हमें क्या फर्क पड़ रहा है? ये जो एकान्त पट्टी पढ़ रखी है लोगों ने, सम्यग्दर्शन! सम्यग्दर्शन! इसको थोड़ा change करो, attitude अपना change करो अब।

सम्यग्चारित्र ग्रहण करने की विधि

सम्यग्दर्शन के साथ भी अगर कोई देशव्रती बनता है, तो भी वह गृहस्थ हो सकता है और direct अगर किसी गृहस्थ के अन्दर एकदम से भाव आ जाए कि महाराज! अब बहुत हो गया, संसार मैंने सब देख लिया। आप तो मुझे बताओ आत्म-कल्याण कैसे करना है? तो भैया! दो प्रतिमा लिए बिना तेरा कल्याण नहीं होगा। चल! तू दो प्रतिमाएँ लेने को तैयार है? हाँ! महाराज! आप जो कहो मैं सब करने को तैयार हूँ। क्या दिक्कत है उसको? देश-चारित्र हो गया। सम्यग्दर्शन के बिना इतनी श्रद्धा आएगी नहीं, इतना विश्वास आएगा ही नहीं। अब जो व्रत लेने के बाद में, जो वह उसका निरन्तर अभ्यास करेगा, यही उसके अन्दर सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की दृढ़ता को

बनाता चला जाएगा। तो यह विधि है और ऐसा होता आया है। लेकिन आज इस पंचम -काल में पढ़े-लिखे गृहस्थ लोगों ने, लोगों को बरगला रखा है। इसलिए गृहस्थ लोग न प्रतिमा लेते हैं, न व्रत लेते हैं और न चारित्र की कोई भावना करते हैं। सम्यग्दर्शन-सम्यग्दर्शन गाते रहते हैं।

क्षायिक भाव कितने प्रकार के हैं**?**

ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च।।४।।

अब क्षायिक-भावों को बताने के लिए, यह सूत्र आया है। हम लोगों ने दूसरे ही सूत्र में पढ़ा था न? क्षायिक भाव कितने प्रकार के? नौ प्रकार। इसमें देखो, गिनो, कितने प्रकार के लिखे हैं? ज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य कितने हुए? सात हुए। दो भूल गए क्या महाराज? ये सूत्र ग्रन्थ हैं, इनको लगाया जाता है। कैसे लगाया जाता है? आगे "च" लिखा हुआ है। सूत्र में एक भी शब्द व्यर्थ का नहीं होता है। समझ आ रहा है? "च" को "चा" नहीं पढ़ना, कई लोग "चा" पढ़ते हैं। 'वीर्याणि चा' 'चा' नहीं है वह, 'च' है, 'वीर्याणि च'| 'च' का मतलब होता है, जो हम ऊपर कह आए हैं, उसको इसके साथ जोड़ लेना। जो बहुत बड़े सूत्रकार होते हैं, सूत्र वचन बोलने वाले होते हैं, मुनि महाराज होते हैं, वह अल्प बोलते हैं, सारभूत बोलते हैं और एक-बार बोलने के बाद में वह चीजें बार-बार दोहराते नहीं है। लिखने की यह पद्धति है। समझाने में तो दस बार भी कहना पड़ेगा, वह अलग बात है। 'च' शब्द से क्या लेना? जो ऊपर अभी हमने क्या लिखा था? सम्यक्त्व-चारित्रे तो इसको यहाँ 'च' शब्द से जोड़ना मतलब सम्यक्त्व और चारित्र, ये दो चीजें और जोड़ लेना और सब के आगे क्षायिक, क्षायिक, क्षायिक, क्षायिक लगा देना। तो क्या हो जाएगा?

1.क्षायिक-ज्ञान
2.क्षायिक-दर्शन
3.क्षायिक-दान
4.क्षायिक-लाभ
5.क्षायिक-भोग
6.क्षायिक-उपभोग
7.क्षायिक-वीर्य
8.क्षायिक-सम्यक्त्व
9.क्षायिक-चारित्र
यह कितने हो गए? यह नौ भाव हो गए, इन नौ भावों में हर भाव कैसा है? क्षायिक-भाव है। समझ आ रहा है?

क्षायिक भावों का वर्णन

क्षायिक का मतलब क्या हो गया? किसी न किसी कर्म के क्षय से यह भाव उत्पन्न हुआ है। क्षय का मतलब क्या हो गया? उस आत्मा के अन्दर अत्यन्त उसका अभाव हो गया। अत्यन्ताभाव का मतलब? उसका बिल्कुल

सत्ता-नाश हो गया। अब तो समझ में आ गया न? सत्ता-नाश। अपने कर्मों का सत्ता-नाश करना और किसी का सत्ता-नाश नहीं करना। मतलब कि क्षायिक-ज्ञान उत्पन्न हुआ तो कौन से कर्म का सत्ता-नाश हुआ?

- ज्ञानावरणीय कर्म का। ज्ञानावरणीय कर्म के सत्ता-नाश से आत्मा में क्षायिक-ज्ञान उत्पन्न होगा।
- फिर ज्ञान के बाद में, क्षायिक-दर्शन उत्पन्न हुआ। कौन से कर्म के नाश से होगा?
  दर्शनावरणीय कर्म के सत्ता नाश से आत्मा में क्षायिक - दर्शन होगा।
- दान- क्षायिक दान किसके सत्ता-नाश से होगा? कोई है कर्म ऐसा जो दान में विघ्न उत्पन्न करता है? दान अन्तराय कर्म! दान अन्तराय कर्म के सत्ता नाश से क्षायिक-दान उत्पन्न होगा।
- फिर लाभ, लाभ अन्तराय कर्म के सत्ता-नाश से आत्मा में क्षायिक-लाभ की प्राप्ति होगी।
- फिर भोग, भोग अन्तराय कर्म के नाश से, नाश से मतलब? सत्ता-नाश से, आत्मा में क्षायिक-भोग की प्राप्ति होगी।
- फिर उपभोग, उपभोग अन्तराय कर्म के सत्ता-नाश से आत्मा में क्षायिक-उपभोग की प्राप्ति होगी।
- फिर वीर्यान्तराय कर्म के सत्ता नाश से आत्मा में क्षायिक-वीर्य की प्राप्ति होगी।
- फिर सम्यक्त्व क्षायिक, सम्यक्त्व भी है न! दर्शन-मोहनीय कल बताया था न! सम्यक्त्व का विरोधी कौन है? पूरा दर्शन-मोहनीय कर्म। दर्शन-मोहनीय कर्म के; एक दर्शनावरणीय कर्म अलग है और मोहनीय कर्म के भेद में, जो दर्शन-मोहनीय कर्म आता है, वह दर्शन-मोहनीय कर्म अलग है, ऐसा अन्तर अलग-अलग जानना। दर्शन-मोहनीय कर्म के सत्ता-नाश से आत्मा में क्षायिक-सम्यक्त्व की प्राप्ति होगी।
- क्षायिक-चारित्र, चारित्र-मोहनीय कर्म के सत्ता-नाश से आत्मा में क्षायिक-चारित्र की प्राप्ति होगी।

ऐसे हर कर्मों के नाश से आत्मा में ये नौ क्षायिक-भाव प्राप्त हो जाते हैं। 'च' शब्द का जो पेट है, वह बहुत-बड़ा है। बड़ा इसलिए है अगर 'च' लिख दिया तो जो कुछ भी आप कहो, महाराज यह छूट गया क्या? क्षायिक भाव नौ ही होते हैं क्या? और भी तो हो सकते हैं और भी बहुत से भाव हो सकते हैं। मान लो, एक सिद्धत्व-भाव ही है। यह किसमें आएगा? आचार्य कहते हैं- 'च' में सब समाते चला जाएगा। जो भी बचा रह गया है, कुछ भी, जो आपको और भी क्षायिक भाव समझ में आएँ, वह सब किसमें जाएँगे? हाँ! इसी सूत्र के 'च' शब्द के अन्दर डाल देना। च शब्द का पेट इसलिए बड़ा कह रहा था मैं। समझ आ रहा है? पारा देखा न आपने? पारा! उसमें कितना भी सोना डालते जाओ। सबको खाता जाएगा-खाता जाएगा-खाता जाएगा। ऐसे यह 'च' शब्द पारा की तरह होता है। इन सूत्रों के एक-एक शब्दों के अपने बड़े गम्भीर अर्थ होते हैं, इसलिए ये सूत्र कहलाते हैं। आज के लिए तो इतना ही ठीक है। थोड़ी-सी इसकी detail, जो क्षायिक-भाव है, कहाँ-कैसे उनकी अनुभूतियाँ किसको होती हैं? इसकी detail हम आगे के समय में करेंगे।